

## لا-مایہابی فکنا : بانوبتا و आमাদের करणीय-ۛ

आमাদের आलोचनार बषय हलो, साहाबाये केराम सतयेर मापकाठि कि ना? तांरा सतय पथेर ओपर छिलेन, ए कथा तो सबাই अकूरुठिठे स्वीकार करे। ला-मायहाबीरा किक्ष साहाबाये केरामके सतयेर मापकाठि मानते मोटेओ प्रसुत नय। बरं अनेक स्फेरे तरा साहाबाये केरामेर आलोचना करते गिये एमन सब अकथय एवं अशाय बसुतय करेछे, या कोनो साधारण मुसलमानेर जन्य ब्यवहार करा समीचीन नय। साहाबाये केराम सम्पर्के तानेर अशालीन मसुतयगुलो तानेरइ रचित ग्रंथ थेके उल्लेख करते आमरा चेष्ठा करव।

'हादियातुल माहदी', ला-मायहाबीदेर अनयतम मौलिक ग्रंथ। लेखक ओयाहीदुज्जान हायदाराबादी। ओइ ग्रंथे तनि लेखेन,  
فان كثیرا من متاخري علماء هذه الامة كانوا افضل من عوام الصحابة في العلم والمعرفة ونشر السنة وهذا مما لا ينكره عاقل۔

अर्थ : एइ उम्माहर परबती आलेमदेर मथे एमन अनेक आलेम आछेन, यारा ज्ञान-प्रज्ञा, सुन्नाहर प्रचार-प्रसारे अनेक साधारण साहाबी थेके उतम। ए कथाके अस्वीकार करा कोनो बिद्वान ब्यक्तिर पक्षे संभव नय। (ख०-१, पृ.-१०)

एकइ ग्रंथे लेखेन,  
لكنه يمكن لبعض الاوليا وجوه اخرى من الفضيلة

अर्थ : अनेक अली एमन गुणागुणे डूषित हते पारनेन, या साहाबीर मथे नेइ।

(प्रामुक्त)

एकइ ग्रंथे उल्लेख आछे,

لا يقال تفضيل الشيخين مجمع عليه حيث جعلوه من امارات اهل السنة لا نأقول دعوى الاجماع غير مسلم

अर्थ : यदि केड प्रश्न करे ये, शायहाइनेर (हयरत आबु बकर ओ उमर (रा.) श्रेष्ठेर ओपर उम्माहर ँकमतय प्रतिष्ठा हयेछे। येहेतू बषयठिके आहले सुन्नात ओयल जामा'आतेर अनयतम निदर्शन बले उल्लेख करा हयेछे। प्रतुतुतरे आमरा बलब, ँकमतय प्रतिष्ठा हयेछे, एइ दाबि करा अग्रहणयोग्य। (प्रामुक्त)

ओइ ग्रंथे आरो उल्लेख आछे,

غير ان هذه الفضيلة للجمهور على الجمهور لا لكل فرد من افراده

अर्थ : साहाबाये केरामेर श्रेष्ठत सामग्रिक दृष्टिकोण थेके। एइ बिधान स्वतन्त्रभावे सब साहाबीर स्फेरे प्रयोज्य नय। (ख०-१, पृ.-१०५)

एकइ ग्रंथकारेर आरेकठि ग्रंथ हछे लुगातुल हादीस। सेखाने बला हयेछे,  
ایک دلیل یہ بھی ہے کہ بعض صحابہ نے ایسے کام کئے ہیں جو شرعا اور عقلا ہر طرح مذموم ہیں

अनेक साहाबी थेके एमन काजओ संघटित हयेछे, या शरीयत एवं युक्ति, उतय दृष्टिकोण थेके निन्दित एवं अग्रहणयोग्य। (ख.-२ पृ.-५६४)

अन्यत्र आछे,

مترجم کہتا ہے کہ اس حدیث کا یہ مطلب نہیں کہ خلفاء کا فعل بھی سنت سے، سنت تو آنحضرت ہی کا قول و فعل سے کیونکہ آپ خطا سے معصوم تھے اور آپ کے خلفاء معصوم نہیں

अर्थां खोलाफादेर काजकर्म एवं कथावार्ता सुन्नात नय। (पृ. १०९)

एकइ ग्रंथे उल्लेख आछे,

مگر اس میں کچھ شک نہیں کہ معاویہ اور عمرو بن العاص دونوں باغی اور سرکش اور شریر تھے اور دونوں صاحبوں کے مناقب یا فضائل بیان کرنا ہرگز روا نہیں بلکہ صرف صحابیت کا لحاظ کر کے ان کے ذکر کو سب و شتم سے پاک رکھنا ہی کافی ہے۔

अर्थां एते कोनो संशयेर अवकाश नेइ ये, मु'आबिया एवं आमर इबनुल आ'स उतयजन राश्ट्रदोही एवं कुचक्री छिलेन। (नाउजुबिल्लाह) तानेर गुणकीर्तन करा कोनोभावेइ वैध नय। साहाबी हओयार कारणे तानेर गालमन्द ना कराटाई यथेष्ठ। (प्रामुक्त पृ. १०)

तानेर आक्तीदा देखुन,

ان لوگوں کو یہ معتبر تاریخی روایات نہیں پہنچیں کہ معاویہ برسر منبر حضرت علی کو برا کہا کرتے تھے بلکہ دوسرے خطیبوں کو بھی حکم دے رکھا تھا کہ وہ ہر خطبہ میں جناب امیر کو برا کہیں معاذ اللہ ان پر لعنت کرتے رہیں، سچی بات یہ ہے کہ معاویہ پر دنیا کی طمع غالب ہوئی تھی اور وہ حضرت علی کو منبر پر لعنت کیا کرتے جیسے ابن جریر محمد نے اپنی تاریخ میں ذکر کیا ہے اور امام حسن نے معاویہ سے جس شرط پر صلح کی تھی ان میں ایک شرط یہ بھی تھی کہ حضرت علی کو ان کے سامنے رو برو برانہ کہیں گے اور حضرت علی کیا معاویہ کو تمام خاندان رسالت سے دلی دشمنی تھی۔

तानेर काछे इतिहासेर एइ निर्भरयोग्य वर्णना पौछेनि ये, मु'आबिया मिशारे दाँडिये हयरत आलीर बिषोदगार करतेन बरं खतीबदेर प्रति तार निर्देश छिलो, खुतबाय येन हयरत



ہم فاروقی تو نہیں محمدی ہیں ہم نے ان کا کلمہ تو نہیں پڑھا آنحضرت کا کلمہ پڑھا ہے۔

آمرا فارقا کی نای، برہں مؤہاممدآ، آمرا ار کالیمار پارٹ کرینی، برہں مؤہاممد (سا.)-ار کالیمار پارٹ کررهآ۔ (خ. ۲، پ. ۲۵۲)

لا-ماہاہابیہار اررهک پورهآ فہرہج آلام سیدکی سآہیؤدنا হাসان إبنه آلی نامک ہرہآ لیکهآ۔

کیا ہر مسلمان اندھا دھند اس بات کی رٹ لگائے جا رہا ہے کہ حضرات حسین صحابی تھے

ہرارٹ হাসان اہر ہوساھن (را.) کی سآہابی آھلن؟ برٹمانه پرای سب مؤسلمان اھ إہک بشواسه مٹ وه، ہرارٹ হাসان اہر ہوساھن (را.) سآہابی آھلن۔ (پ. ۲۰)

اھکھ اھرہآ ہلا ہرہرہآ- ان آھاق وشواہدی روتنی میں ہرہرات حسین کو زمرہ صحابہ میں شمار کرنا صریحا سبائت کی ترجمانی ہے، یا اندھا دھند تقلید کی خرابی ورنہ حقیقت یہ ہے کہ حضرات حسین کو زمرہ تابعین میں ہی شمار کیا جاسکتا ہے۔

اسب واسٹواتا اہر ہرمانادیر ہرہرہ ہرارٹ হাসان ہوساھنکه سآہابیہار دله انسٹرکٹ کرنا س্পسٹت سآہابییہار دالالی کرارہی ناماسنار اآھوا ااا اہک انوکرہرہرہی ہرہفلال. انآھای سواترہسیدک واسٹواتا ہرہآ، ہرارٹ হাসان ہوساھن (را.) ااوهائہارہی انسٹرکٹ۔ (پ. ۲۰)

اھ ہرہادب اررهو لیکهآ، حقیقت یہ ہے کہ سیدنا حسن کو اپنی ماں کا دودھ پینے کا موقع نہ ملا تھا آپ کی پرورش دوسرے دودھ پر ہوئی تھی اس لئے صحبت کے لحاظ سے آپ کمزور تھے اور کم احق نشوونما نہ پاسکے تھے اس پر کثرت سے حرم کی زندگی کے دلدادہ تھے جس کی وجہ سے آپ کو بعض روايات کے مطابق آخری ایام میں تمیل کا عارضہ لاحق ہو گیا

اھرہآ ہرہآ، ہرارٹ হাসان (را.) نیج مارهرہ دؤہ پان کرار سؤہوگ پاننی۔ ار لالان-پالان انهرہ دؤہ دیهہ ہرہآھل۔ اھ سؤہرہرہ دیک آھکه آنی اھکٹؤ دؤربل و روهوگ آاھپهر آھلن۔ سآھه سآھه آنی ہرهرهمر آاڈسمر و آوهلوسپؤرہ ہللسی آوهبنهر ہرآھاشی آھلن۔ ا آونآ ہرہبئو ہرہناہ پاوهآ ہای، آنی شہس آوهبنه فؤسفسسهر کفٹه آاکراست آھلن۔ (پ. ۷۰) (ناڈیوہللہآ)

لا-ماہاہابیہار اررهک اھلک ہرہآ ہرہج آلام سیدکی کرٹک رآٹٹ آھلاکٹه رآشادا. اھ اھرہ آنی لهآھن،

مگر ہرہرات علی شرف و مچد کے ہلند مقابلات پر فائز ہوئیے باوجود تاریخ اسلام میں کوئی ایسا نقش چھوڑنے پر قادر نہ ہو سکے جس سے یہ نتیجہ اخذ کیا جاسکے کہ آپ بھی خلیفہ حق تھے۔

کیئٹک ہرارٹ آلی (را.) سمان و مرآادار انهک اآااسانہ اآرہسٹت ہلهو اھلسامهر اھتہاسه ار امان کوهو آوهآآل آرمیکا نہہ، یا دھارا ہواہا ہای وه، آنی او اھکآون ساتانیٹ آھلیفا آھلن۔ (پ. ۱۸)

اھ اھرہآ انآ آاڑگای آھه، اور ہم دیکھتے ہیں سیدنا علی کے نام نہاد دور خلافت میں صحابہ کرام اور تابعین کے گروہ کے گروہ عراق اور حجاز سے بھاگ کر شام میں رہائش پذیر ہو رہے تھے۔

آمارا دہآھه پآاآھ، ہرارٹ آالیار آھاکآت آھلاکٹامله سآہاباهه کررام و ااوهائہار دله دله اھراک اہر ہرہآج ہرہرآگ کره سیریاہ سؤاہی آاباس گاڈه آلهآھلن۔ (پ. ۷۵)

اھ اھرہآ اررهو آھه، اس امر کی روشنی میں یہ کہنا کہ سیدنا ذوالنورین کی شہادت کسی کے بعد سیدنا علی ہی سچ



মানসে কুফা সফর করেননি। বরং সাম্রাজ্যের অধিকারী হওয়াটাই ছিল তাঁর প্রধান টার্গেট। (পৃ. ১৮)

লা-মাযহাবীদের আরেক গুরুজি 'মুহাম্মদ ইসহাক'-এর বক্তৃতা সংকলন 'খোতবাতে ইসহাক' থেকে সাহাবা বিদ্বেষের কিছু উদ্ধৃতি উপস্থাপন করছি। এক জায়গায় বলা হয়েছে, হযরত মু'আবিয়া (রা.)-এর শাসনামল ছিল ইসলাম এবং মুসলমানদের জন্য এক বিভীষিকাময় যুগ। তার যুগে দ্বীনের অনেক মৌলিক বিষয় হয়তো ধ্বংস, নয়তো বিকৃত হয়ে যায়। তার শাসনামলে হযরত হুজর ইবনে ওয়ায়েল (রা.)-এর মতো রাসূলের পিয় সাহাবীকে নির্দয়ভাবে হত্যা করা হয়। হাকম ইবনে গিফারী (রা.)-এর মৃত্যুই হয়েছে এই দু'আ করা অবস্থায়, হে আল্লাহ! আমার ভাগ্যে যদি সামান্য হলেও কল্যাণ থাকে, তাহলে আমাকে এই পৃথিবী থেকে উঠিয়ে নাও। (পৃ. ৮) মু'আবিয়ার শাসনামলে হযরত আব্দুল্লাহ ইবনে যুবাইর (রা.) তাকে কতবার মিনতি করলেন যে, হে মু'আবিয়া! রাসূলের আদর্শে রাষ্ট্র পরিচালনা করো। কিন্তু চোরে না শোনে ধর্মের কাহিনী! মু'আবিয়ার সরাসরি উত্তর-না।

ওই গ্রন্থের প্রায় প্রতিটি পৃষ্ঠায় হযরত মু'আবিয়া (রা.)-কে খবীস (ভ্রষ্ট) বলে সম্বোধন করা হয়েছে। (পৃ. ১৪, ১৫)

একই গ্রন্থে বলা হয়েছে, সালেহ ইবনে মাহদী নামক জৈনিক সালাফী আলেম লিখেছেন যে, লোকেরা হযরত আলী এবং মু'আবিয়ার মধ্যকার যুদ্ধবিগ্রহের আলোচনা করতে গিয়ে বলে যে, মু'আবিয়ার ইজতিহাদ (গবেষণা ও দর্শন) ভুল ছিল। অর্থাৎ, তার পক্ষ থেকে অনেক খোঁড়া অজুহাত উপস্থাপন করা হয়। আমি বলি, এগুলো কিছু নয়। এ ধরনের যুক্তি উপস্থাপন করা যেন

শাক দিয়ে মাছ ঢাকারই নামান্তর। বাস্তব কথা হচ্ছে, মু'আবিয়া ছিল ইতিহাসের এক খলনায়ক। তার ক্ষমতালিপ্সা ছিল সর্বজনবিদিত। তার কাছে ধর্মের কোনো গুরুত্বই ছিল না। সে নিজেও দ্বীন-ধর্ম থেকে যোজন যোজন দূরত্বে ছিল। ক্ষমতার লাভের জন্য সব ধরনের শত্রুতা, ধূর্তামি, প্রতারণা এবং ধোঁকাবাজি ছিল তার কাছে ডাল-ভাতের মতো সহজ। এমন কোনো ইतरামি আর অন্যায় ছিল না, যা সে ধর্মের নামে চালিয়ে দেয়নি। সর্বশেষ ইয়াযিদকে ওলী আহদ (খেলাফতের উত্তরাধিকারী) নির্বাচন করার মাধ্যমে ইসলামের কফিনে শেষ পেরেকটি ঠুকতেও সে কুষ্ঠাবোধ করেনি। প্রথম প্রথম সে সাহাবীদেরকে অন্যায়ভাবে হত্যা করত এবং লোকদের মুখ বন্ধ করার জন্য তাদেরকে যে সে কত ঘুষ দিয়েছে তার কোনো ইয়ত্তা নেই। চার বছর পূর্ব থেকে তার বায়আত হতে লোকদেরকে উদ্বুদ্ধ করা আরম্ভ করে। (পৃ. ১৭)

আল্লাহ সাক্ষী! মু'আবিয়ার শাসনামলে ইসলামের ওপর যে ভয়ানক ঝড়-ঝাপটা বয়ে গেছে, তার কোন অংশে কেয়ামত থেকে কম নয়। কিন্তু এর পরও লোকেরা কেন তার গুণকীর্তন করে, তা বোধগম্য নয়। (পৃ. ৪৫)

'তানবীরুল আফাক ফী মাসআলাতিত্‌তালাক' লা-মাযহাবীদের মৌলিক একটি প্রামাণ্য গ্রন্থ। লেখক, মুহাম্মদ রঈস নদভী। ওই গ্রন্থের এক স্থানে লেখক তালাকের আলোচনা করতে গিয়ে বলেন, এটি এক স্বতঃসিদ্ধ বাস্তবতা যে, কোনো সাহাবী এ কথা দাবি করেননি যে, একসাথে তিন তালাক পতিত হওয়ার ফাতাওয়া কুরআন-হাদীসের কোনো স্পষ্ট প্রমাণ দ্বারা সাব্যস্ত করেছি। বরং অনেক বর্ণনায় স্পষ্ট উল্লেখ আছে,

جاء رجل الى علي بن ابي طالب فقال انى طلقت امرأتى الفا قال بانك منك بثلاث اقسام سائرهن بين نسائك  
অর্থাৎ, হযরত আলী (রা.)-এর কাছে এক ব্যক্তি এসে বলল যে, আমি আমার স্ত্রীকে এক হাজার বার তালাক দিয়েছি। প্রত্যুত্তরে হযরত আলী (রা.) বললেন, তিন তালাকের কারণে তোমার স্ত্রী তালাকে বাইন (এমন তালাক যার পর বিবাহ দোহরানো বা স্ত্রী হিসেবে গ্রহণ করা যায় না।) হয়ে গেছে। অবশিষ্ট তালাকগুলো তোমার অন্য স্ত্রীদের ওপর বট্টন করে দাও। (মুসান্নাফে ইবনে আবী শায়বা ১৩-১৪, সুনানে দারে কুতনী ২/১৪৩৩)

স্পষ্ট কথা যে, পূর্বোক্ত কথা হযরত আলী (রা.)-এর অতিমাত্রার রাগেরই বহিঃপ্রকাশ মাত্র। অন্যথায় তিন তালাকের অধিক তালাক অন্য স্ত্রীর ওপর বট্টন করার কথা কোনো ইমামই বলেন না। অনুরূপভাবে যেসব সাহাবী একের অধিক প্রদত্ত তালাক পতিত হয় মর্মে ফাতাওয়া দিয়েছে, তাদের ফাতাওয়াকেও রাগ এবং ক্ষোভের বহিঃপ্রকাশ বলে ধরে নেয়া হবে। অর্থাৎ এক সময়ে একের অধিক তালাক দিলে তা পতিত হবে না। যেসব বর্ণনায় দ্বিতীয় খলীফা হযরত উমর (রা.) সম্পর্কে এ কথা বর্ণিত আছে, তিনি একের অধিক তালাক পতিত হয় বলে সরকারি প্রজ্ঞাপন জারি করেছেন, এ পদক্ষেপ নেয়ার কারণও শুধুমাত্র এটাই যে, ধর্মীয় ক্ষেত্রে মানুষের মধ্যে যে উদাসীনতা, বেপরোয়াভাব পরিলক্ষিত হচ্ছে, তা চিরতরে বন্ধ করে দেয়া। অন্য কিছু (তথা বাস্তবে তালাক পতিত হওয়া) নয়। (পৃ. ৪১)

একই গ্রন্থে উল্লেখ আছে, যদিও এ ধরনের তালাক পতিত হওয়ার ঘটনা অনেক সাহাবী থেকে সুস্পষ্টভাবে বর্ণিত

আছে। কিন্তু এ ধরনের ফাতাওয়া থেকে কশ্মিনকালেও এ কথা প্রমাণিত হয় না যে, ফাতাওয়া প্রদানকারী এ ধরনের তালাককে কুরআন-সুন্নাহ অনুযায়ী মনে করে। বিভিন্ন কিতাবে স্পষ্ট বর্ণিত আছে, অনেক সাহাবী যদিও তিন তালাক একসাথে পতিত হয় মর্মে ফাতাওয়া দিয়েছেন, কিন্তু তাঁরা এ কথাও অকুণ্ঠচিত্তে স্বীকার করেছেন যে, একসাথে তিন তালাক পতিত হওয়া, এটি কুরআন-সুন্নাহর সম্পূর্ণ পরিপন্থী। স্পষ্ট ভাষায় বলতে গেলে, অকাট্য হারাম এবং অবৈধ। (পৃ. ৪২)

মুহাম্মদ ইসমাঈল সালফী, লা-মাযহাবীদের অন্যতম পুরোধা। তার রচিত ফাতাওয়ায়ে সালফিয়্যাহ নামক গ্রন্থে প্রখ্যাত সাহাবী হযরত আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রা.)-এর জীবনী আলোচনা করতে গিয়ে লেখেন যে,

كان ابن عمر اذا حج او اعتمر قبض على لحيته فما فضل اخذه  
 হযরত ইবনে উমর (রা.) হজ এবং উমরা করার পর দাড়ির যে অংশ

একমুষ্টির বাইরে চলে যেত, তা কেটে ফেলতেন। (জামিউস সহীহ ১/ ২৭২)

সাধারণভাবে সব সাহাবী বিশেষভাবে হযরত ইবনে উমর (রা.) রাসূল (সা.)-এর সুন্নাহের অনুসরণের ক্ষেত্রে আপসহীন এবং অদ্বিতীয় ছিলেন। কিন্তু তার এই কাজটি হাদীসের বিশুদ্ধ বর্ণনার সম্পূর্ণ পরিপন্থী। (পৃ. ১০৭)

তথাকথিত আহলে হাদীস সম্প্রদায় যদিও নিজেদেরকে সাহাবীপ্রেমিক বলে দাবি করে সাধারণ মুসলমানদেরকে ধোঁকায় ফেলতে চায়, কিন্তু আমরা তাদেরই রচিত গ্রন্থাবলি থেকে বিভিন্ন উদ্ধৃতি দিয়ে তাদের আসল ভয়ংকর চেহারা উম্মাহর সামনে উন্মোচন করার প্রয়াস পেয়েছি। তারা নিজেদেরকে যতই মনোহরী মোড়কে উপস্থাপন করুক না কেন, তাদের ভেতর যে ভয়ংকর এবং কুৎসিত কালো বিড়াল বসবাস করে, আমরা তাদের সেই থলের বিড়াল বের করতে সামান্য প্রয়াস পেয়েছি মাত্র। এত দীর্ঘ সাতকাহনের অবতারণা এ জন্য করতে হলো, যেন সম্মানীত শোতাবন্দ

অনুধাবন করতে পারেন যে, আমাদের সাথে লা-মাযহাবীদের বিরোধ কি কয়েকটি মুষ্টিমেয় মাসআলায়? না মূল আকীদায়? ইসলাম ধর্মে সাহাবীদের স্থান কোথায়? আর তারা সাহাবীদেরকে কোন দৃষ্টিকোণ থেকে বিচার করে থাকে? ইতিহাসের অনির্ভরযোগ্য এবং বানোয়াট বর্ণনার ওপর ভিত্তি করে রাসূল (সা.)-এর জন্য জীবন উৎসর্গকারী এবং তাঁর সর্বাধিক প্রিয় সাহাবীগণকে কি ইতিহাসের কাঠগড়ায় দাঁড় করানো যায়? না তাদের পরিমাপ করতে হলে প্রয়োজন কুরআন-হাদীসের কষ্টিপাথর?

আশা করি, শোতাবন্দ বিষয়গুলোর সঠিক জবাব পেয়েছেন। সামনের সংখ্যা থেকে তাদের সাথে বিরোধপূর্ণ মাসআলাগুলোর বিস্তারিত আলোচনা শুরু করা হবে। ইনশাআল্লাহ!

(চলবে ইনশাআল্লাহ)

গ্রন্থনা ও অনুবাদ :  
 হাফেজ রিদওয়ানুল কাদির উখিয়াভী

## চশমার জগতে যুগ যুগ ধরে বিখ্যাত ও বিশ্বস্ত মেহরুব অপটিক্যাল কোং

এখানে অত্যাধুনিক মেশিনের সাহায্যে চক্ষু পরীক্ষা করা হয়।  
 পাইকারি ও খুচরা দেশি-বিদেশি চশমা সুলভ মূল্যে বিক্রি করা হয়।



১২ পাটুয়াটুলি রোড, ঢাকা ১১০০  
 ফোন : ০২- ৭১১৫৩৮০ , ০২- ৭১১৯৯১১

১৩ গ্রীন সুপার মার্কেট, গ্রীন রোড, ঢাকা-১২১৫। ফোন :  
 ০২-৯১১৩৮৫১